

THE DEPUTY MINISTER IN THE
MINISTRY OF RAILWAYS (SHRI
MOHD. SHAFI QURESHI): (a) Yes.

(b) One.

(c) The question of promoting him
against the reserved quota will be
considered in due course.

12.18 hrs.

CALLING ATTENTION TO MATTER
OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

DISAPPEARANCE OF HIGH-POWERED
SOPHISTICATED TELESCOPE FROM DEFENCE
INSTALLATION AT CHANDIPUR, ORISSA

श्री अटल बिहारी वाजपेयी
(स्वालय): अध्यक्ष महोदय जी, मैं अबिलम्ब-
नीय लोक महत्व के निम्नलिखित विषय की और
रक्षा मंत्री का ध्यान दिलाता हूँ और प्रार्थना
करता हूँ कि वह इस बारे में एक वक्तव्य
दे :

“चन्डीपुर, उड़ीसा में एक रक्षा मस्थान
के स्टोर से 1,80,000 रुपये के मूल्य का
शक्तिशाली आधुनिक दूरबीन के गायब हो
जाने का समाचार।”

रक्षा मंत्रालय (रक्षा उत्पादन) में राज्य
मंत्री (श्री विद्याचरण शुक्ल) - अध्यक्ष
महोदय, बालासोर (उड़ीसा) के परीक्षण
एक प्रयोग प्रतिष्ठान में 11 अप्रैल,
1974 को एक विशेष प्रकार की दूरबीन
लापता पाई गई। इस उपकरण को लगभग
36,000 रुपये के मूल्य पर आयात किया
गया था। इस मामले की पुलिस को
तत्काल सूचना दी गई और विभागीय
जाच अदालत भी बुलाई गई है। केन्द्रीय
जाच ब्यूरो को भी इस मामले में जांच-
पड़ताल करने का अनुरोध किया गया है।
उनकी रिपोर्ट की प्रतीक्षा है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: अध्यक्ष
जी, मैं समाचार समितियों और समाचार-

पत्रों को बघाई देना चाहता हूँ कि जिन के
माध्यम से यह समाचार हम तक पहुंचा
है। लेकिन उस समाचार के अनुसार चोरी
13 मार्च को हुई। इसी प्रतिष्ठान के
एक प्रवक्ता ने सवाद समितियों को बताया
कि 13 मार्च को यह दूरबीन गायब पाई
गई। लेकिन मंत्री महोदय का कहना है कि
यह चोरी 11 अप्रैल को हुई। अब मैं
उनके उत्तर की और उन्हीं के प्रतिष्ठान
के एक प्रवक्ता ने जो कुछ कहा है, उसकी
संगति नहीं बिठा पा रहा हूँ।

दूसरी बात यह है कि चोरी 11 अप्रैल
को हुई, आज 23 अप्रैल है। इस बीच
मे जो जाच की गई उस का क्या परिणाम
निकला? जाच गम्भीरता से की जा
रही है, यह स्पष्ट है। पुनिम क. तत्काल
सूचना दी गई। मैं “तत्काल” शब्द पर
जोर देना चाहता हूँ। अगर सूचना
तत्काल दी गई तो कार्यवाही भी तत्काल
हुई होगी और नतीजा भी थोड़ा बहुत
तत्काल आया होगा। लेकिन उम से
सदन को अवगत नहीं किया जा रहा है।

मामले की गम्भीरता इससे भी शनकती
है कि एक विभागीय जाच अदालत भी
बिठाई गई है और सब से बड़ी बात यह है
कि सेन्ट्रल ब्यूरो आफ इन्वेस्टीगेशन,
सी० बी० आई० को भी तस्वीर में लाया
गया है। तो इतनी सारी शक्तिशाली जाच
करने के बाद पिछले कुछ दिनों में जो नतीजे
निकले हैं, उनको सदन जानना चाहेगा।

तीसरी बात यह है कि यह साधारण
चोरी का मामला नहीं मान्य होता है।
अगर साधारण चोरी का मामला होता,
तो सी० बी० आई० को चित्त में लाने की
आवश्यकता नहीं थी। यह प्रतिष्ठान
परीक्षा एवं प्रयोग का प्रतिष्ठान है। जिन
शस्त्रों का, जिन वायुक शस्त्रों का हम
निर्माण करते हैं, वे कितने सफल होते हैं,

इस का परीक्षण यहाँ किया जाता है। समुद्र के किनारे के निकट श्रीर समुद्र के भीतर होने वाले परिक्षणों को भी दूरबीन द्वारा देखा जा सके, इस दृष्टि में भी इस दूरबीन का महत्व था। सवाल यह है कि क्या इस तरह के उपकरणों की हिफाजत की, देखभाल की, चौकीदारी की कोई व्यवस्था नहीं है? दूरबीन छोटी नहीं थी। कोई उसे जब में रख कर नहीं ले जा सकता था। वह बड़ी चीज़ थी और उसे ताले में रखा जाता होगा, बाहर पहरा रहता होगा? किसी के लिए यह सम्भव कैसे हुआ कि वह इस तरह के उपकरण को बाहर ले जाय। मंत्री महोदय ने इस बारे में कोई प्रवाश नहीं डाला है। यह भी ताज़ुब की बात है कि चोरी हो गई लेकिन अभी तक किसी कर्मचारी के खिलाफ कार्यवाही नहीं हुई?

श्री एस० एम० बनर्जी (कानपुर) : कर्मचारी ने चोरी नहीं की होगी। इतना बड़ा सामान तो अफसर ही ले जा सकता है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी में अफसरों को भी कर्मचारी समझता हूँ। बात यह है कि हमारे बनर्जी माहब जब एक कर्मचारी थे, तो मैं इन को अफसर ही समझता था . . . (ध्वजबान)।

अध्यक्ष जी, किसी के खिलाफ कार्यवाही नहीं हुई, किसी को मुआतल नहीं किया गया। हम जानना चाहेंगे, किसी से पूछताछ की गई है? उस में क्या निकला है। यह मामला साधारण मामला नहीं है . . . (ध्वजबान) . . .

मैं उधर ही आ रहा हूँ। मुझे पता लगाना है कि क्या इस में यूथ कॉंग्रेस का हाथ तो नहीं है? क्या आर०एम०एस० की गतिविधियों को देखने के लिए वह दूरबीन को अफसरों को नहीं अनुमति कर रहे हैं . . . (ध्वजबान) . . .

अध्यक्ष महोदय, क्या यह सच है कि इस प्रतिष्ठान में कार्फा समय से कुछ असतौब है मजदूरों में, कर्मचारियों में श्रीर प्रबन्धकों में कुछ तनाव है? क्या यह सच है कि यह मामला साधारण चोरी का मामला नहीं है? इस में कुछ ऐसे तत्व शामिल हैं जो देश की सुरक्षा के लिए भी खतरा पैदा कर सकते हैं।

अध्यक्ष महोदय, हम यह भी जानना चाहेंगे कि यह कीमत के बारे में जो प्रेस रिपोर्टें में श्रीर मंत्री महोदय के वक्तव्य में अन्तर-विरोध है, इस का क्या कारण है? समाचारपत्र में जो कीमत छपी है वह प्रतिष्ठान के प्रबन्धकों द्वारा बताई गई कीमत है लेकिन कीमत के बारे में मवाल स्पष्ट हो जाएगा अगर मंत्री महोदय इस बार में प्रकाश डाल दें कि यह दूरबीन कब मगाई गई थी और किस देश में मगाई गई थी और यहाँ आने पर उस की कीमत क्या पड़ी।

अध्यक्ष महोदय, मैं समझना हूँ कि इन प्रश्न ही पर्याप्त हैं।

श्री विद्याचरण शुक्ल अध्यक्ष महोदय, मैं बहुत अनुग्रहीत हूँ माननीय सदस्य का, जो उन्होंने इस सवाल को यहाँ उठाया क्योंकि हम लोग भी इस बात को मानते हैं कि यद्यपि यह कोई बहुत गम्भीर चीज़ नहीं थी और कुछ ऐसी बात नहीं थी जो सुरक्षा की दृष्टि से बहुत गुप्त चीज़ मानी जाए, ऐसा कोई यह उपकरण नहीं था, तो भी इस तरह के एक प्रतिष्ठान में इस तरह की चोरी की घटना को कभी, किसी प्रकार से हलके रूप में नहीं लेना चाहिए।

ज्यों ही कल हम लोगों को इस का नोटिस मिला और कल जो हम ने बालासोर में टेलीफोन के द्वारा पूछताछ की, तो हम को यह बताया गया कि सुरक्षा मंत्रालय और रक्षा-उत्पादन विभाग, जिस के अन्तर्गत

[श्री विद्याचरण शुक्ल]

यह काम होता है, के किसी प्रवक्ता ने किमी प्राकर का कोई स्टेटमेंट नहीं दिया और जो खबर अखबार ने छापी है 13 मार्च इत्यादि के बारे में, वह सही नहीं है। मैं उस का विवरण बताता हूँ। इस दूरबीन को 1968 में मंगाया गया था घाज से लगभग छ. साल पहले। फारेन एक्मचेन्ज के रेट के हिसाब से उस समय जो कीमत थी, उस कीमत का मैंने निर्देश दिया है। इस उपकरण के दो भाग थे। एक तो है दूरबीन और दूसरा है इस का एक साइट। इस को इटारसी में जो प्रूफ रेंज हम ने स्थापित किया था, उस में उपयोग करने के लिए मंगाया गया था। जब यह उपकरण आया, उस वक्त इटारसी का रेंज तैयार नहीं थी। इसलिए इसको बालासोर भेज दिया था जांच पड़ताल करने के लिए कि हम का जो यंत्र है, वह ठीक काम कर रहा है या नहीं इस के काम को सतोषजनक पाया गया। वहां काम होता रहा। जब इटारमी का प्रूफ रेंज तैयार हो गया, तो काफ़ी इस के बारे में बातचीत, खतो-किताबत चली कि इस को बालासोर में रहने दिया जाए या इटारसी में रखा जाए। बालासोर वाले इस को छोड़ना नहीं चाहते थे और इटारसी वाले इस को मंगाना चाहते थे। अन्ततः हम ने यह तय किया कि इस को इटारमी भेजा जाए और इसीलिए इस के प्रूफ रेंज को निकाल कर इस को बालासोर के जनरल स्टोर में लाया गया और पैक किया गया, जिस से इटारसी का जो व्यक्ति इस को ले जाने के लिए आने वाला था, उस को उसे दे दिया जाए क्योंकि हम नहीं चाहते थे कि इसे रेल या पार्सल के द्वारा भेजा जाए। इस तरह से एक व्यक्ति के साथ इस को भेजने का प्रबन्ध किया गया और वह सज्जन वहां पर 13 तारीख को पहुंचे लेने के लिए क्योंकि हम चाहते थे कि 14 अप्रैल तक यह चीज इटारसी में पहुंच जाए। जब बक्सा खोला गया, तो दूरबीन गायब थी, वह मिली

नहीं। यह चीज 11 अप्रैल को हुई।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : हो सकता है कि 13 मार्च को गायब हुई हो ?

श्री विद्याचरण शुक्ल : 13 मार्च को वह काम में लाई जा रही थी, उस को हटाया नहीं गया था। वह हटाई गई थी चन्द दिन पहले ही और ला कर उस को जनरल स्टोर में बन्द कर दिया गया था बक्स में। इसलिए 13 मार्च को गायब होने की सम्भावना नहीं है क्योंकि कुछ दिन पहले उस को पैक कर के जनरल स्टोर में रखा गया था ताकि जैसे ही वह सज्जन आएँ, वे उस को ले कर जा सकें।

जैसे ही यह दुर्घटना हमारे सामने आई, तो तत्काल, जैसा कि माननीय सदस्य ने 'तत्काल' शब्द पर जोर दिया, हम ने इस की सूचना पुलिस को दी क्योंकि हम इस बात की गम्भीरता को समझते हैं और हमारे जो सैनिक अधिकारीगण और जो वैज्ञानिक हैं उन्होंने भी यह ठीक समझा कि उड़ीसा की जो वाच है सी०बी०आई० की, उस को इस में रखा जाए, जिस से कि वह जांच ठीक से हो सके। हमारी जो प्रक्रिया है, उस के अनुसार एक विभागीय जांच कमीशन की नियुक्ति भी तत्काल कर दी गई, जिस से हर तरह की चीज का हर स्तर पर पता लग सके कि ऐसी बात क्यों हुई और क्योंकि इस में ज्यादा समय नहीं गुजरना है, इसलिए गम्भीरता से और बारीकी से जांच करना जरूरी है, इस से पहले कि किसी निष्कर्ष पर पहुंचें। अभी किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचे हैं और जैसे ही किसी निष्कर्ष पर पहुंचेंगे, तो इस की सूचना आज नहीं, जब भी निष्कर्ष आएगा, सबको दे देंगे। इस में कोई आपत्ति की बात नहीं है। पर जब तक कोई नतीजा न निकले तब तक किसी के खिलाफ चाहे वह कर्मचारी हो और चाहे वह अधिकारी हो, माननीय सदस्य भी इस बात से सहमत होंगे, कोई कार्यवाही करना उचित नहीं

होगा। जब हमें सब चीजों का पता लग जाएगा, तो हम उस के ऊपर कार्यवाही करेंगे।

कीमत जो हम से बताई है, वह 1968 की कीमत है और यह वह कीमत है जिस पर हम ने उस को खरीदा था और जो मैं ने मुख्य वक्तव्य में बताई है।

यह बात सही है कि वहां पर कुछ असतोष कर्मचारियों और अधिकारियों के बीच में रहा है और उस को हम दूर करने का प्रयत्न करते रहे हैं। मैं समझता हूँ कि वहां के कर्मचारी बहुत अच्छा देश का काम कर रहे हैं। उनकी कुछ कठिनाइयां हो सकती हैं, परेशानियां हो सकती हैं। उनको वे आप में बैठ कर तय कर लेते हैं। असतोष और तनाव यदि है तो उसके होते हुए भी काम में वहां किसी प्रकार की अभी तक बाधा नहीं आई है। जब कोई आती भी है तो उसको हम दुरुस्त करते रहते हैं।

जहां तक सुरक्षा का वहां प्रश्न है वहां काफी लॉग इस काम के लिए रखे गए हैं। वरीब डार्ड मील के क्षेत्र में इस्टेब्लिशमेंट का काम होता है। वहां कुछ बाउंडे वायर फेंसिंग है, और कुछ दीवारें हैं, चौकीदारों के रहने का स्थान है। सब कुछ होते हुए भी जो दुर्घटना हुई है इसका मतलब है कि अन्दर ही किसी ने बंदबंद की है या हमारी व्यवस्था में कुछ खामी हो सकती है। इस चीज का पता लगा कर फिर उसके ऊपर कार्रवाई की जाएगी और जहां कहीं खामी होगी या दोष होगा उसको दूर दिया जाएगा। जो दोषी पाए जाएंगे उनको हम सजा भी देंगे।

श्री सतपाल कपूर (पटियाला)
मिलिट्री, नेवल और एयर फोर्स इनकी जहां तक सुरक्षा का ताल्लुक है 1965 की जग के बाब यह इंटरनेशनली एस्टेबलिश होती रही है। इस बात की हम सब को खुशी

है। लेकिन मिलिट्री स्टोर्ज का जहां तक ताल्लुक है उसके बारे में कई बार तरह तरह की बातें सुनने में आती हैं। हमारे यहां पटियाला में भी स्टोर है। और भी कई जगह हैं। आम तौर पर छोटी मोटी चोरियां के वाकाल होते रहते हैं, डोजल की, पेट्रोल, टायर ट्यूब्स आदि की चोरियां होती रहती हैं।

एक माननीय सदस्य कानपुर में बम पकड़े गए।

श्री सतपाल कपूर पता नहीं मिलिट्री के ये या प्राइवेट ये।

मैं तजवीज करना चाहता हूँ कि जो हमारा मिन्थोरिटी स्टाफ है या सुपरविजन का तरीका है उसको हम मजबूत करे उसकी तरफ ज्यादा ध्यान दें ताकि इस तरह की रिपोर्ट्स अक्सर न हो या पार्लियामेंट में न आए कि मिलिट्री स्टोर्ज से कोई चीज गायब हो गई है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : गायब हो जाए और खबर न आए ?

श्री सतपाल कपूर . मैं तजवीज कर रहा हूँ कि सुपरविजन को मजबूत करे, उसको ठीक करे ताकि चोरियां न हो। जो लोग इस किस्म की कार्रवाई करते हैं उनको आप रोके। सियासी, गैर सियासी, डैस्ट्रिक्टिव, पोलिटिकल, नान-पोलिटिकल सभी किस्म के लोग हो सकते हैं। उनको आप रोके।

श्री मधु सिन्घे . (बाका) यहां नहीं आनी चाहिये ये खबरे ?

श्री सतपाल कपूर . चोरियां होगी तो रिपोर्ट आएंगी ही। अगर सुपरविजन मजबूत होगा तो चोरियां नहीं होंगी और रिपोर्ट भी नहीं आएंगी। जैसा कहने का यह मतलब नहीं है कि चोरियां होने दें और

[श्री मतवाल अ.पूर]

रिपोर्टमें न आने दे। मैं हैरान हू कि आपको और अटल बिहारी जी को क्या हो गया है।

जहां मिलिट्री सुप्रेमैसी एस्टैबलिश हो रही है वहां जरूरत इस बात की भी है कि आप अपना कंट्रोल मजबूत करें ताकि इस किस्म के वाकाल न हो।

दूसरी मेरी तजवीज यह है कि इनक्वायरी कम्प्लीट होने के बाद जिन किसी को मज्जा मिले या एकशन लिया जाए या यह पता चल जाए कि कैसे यहां से चोरी हुई, उसकी एक मुकम्मिल रिपोर्ट हाउस के सामने आप दें ताकि मैम्बर जान सकें कि इस में क्या एकशन लिया गया है ?

श्री विद्याचरण शुक्ल माननीय सदस्य की जहां तक दूसरी बात का ताल्लुक है मैं मजूर करता हू कि जैसे ही हमारे पास इसके बारे में मुकम्मिल सूचना आ जाती है और हम कार्रवाई करने हे तो उसकी सूचना हम मदन को दें। ऐसा हम अवश्य करेंगे क्योंकि यह मामला मदन में उठाया गया है और यह उपयुक्त होगा कि जब इनक्वायरी मुकम्मिल हो जाए तो मदन को इस की सूचना दी जाए।

दूसरी बात इस मामले से सम्बन्ध नहीं रखती है। माननीय सदस्य की वह बात अपने स्थान पर ठीक हो सकती है। हम माल बना करके स्थल, जल या वायु मेंना को दे देते हैं और वे अपने आईनेम डिपोज़ में उन चीजों को रखते हैं। वहां से, अगर कुछ चोरी होता है इधर उधर गडबड होनी है तो उसकी सुरक्षा का इंतज़ाम करना स्थल, जल तथा वायुसेना वालों का काम है और वे इसको करते हैं। इसका हम लोगों में कोई मतलब नहीं है। लेकिन जो बात आपने उठाई है कि इस में सुरक्षा व्यवस्था अच्छी होनी चाहिये इस बात को जो लोग इसके इन्चार्ज हैं उनको मैं आपकी भावनाओं से अवगत करा दूंगा।

SHRI VIKRAM MAHAJAN (Kangra): The theft of this instrument

raises a broader question regarding the security of our defence stores, installations, laboratories and so forth. Surely it is not the case of any one that this instrument, this particular instrument was meant for sport or anything. It had certain defence implications. It was a sophisticated equipment. Nobody who stole it took it for the purpose of decorating his drawing-room or anything like that, or, as a piece of art. It was meant for a specific purpose. Therefore it cannot be lightly treated. We have had a series of incidents wherein Defence stores were involved. Recently we had recovery of bombs which had defence markings and now it is a case of this instrument. Some of us have a feeling that there is a regular conspiracy going on by virtue of which certain interested parties are collecting these defence and sophisticated equipments so that at some crucial time they can create some sort of unrest in the country and it is part of a conspiracy. There are various such thefts which are going on and this raises a broader question. In the context of these factors, may I know whether some sort of high-powered enquiry will be conducted into the working of the Security system of the defence stores, defence installations, laboratories etc., I want the Minister to tell us whether he is prepared to have this sort of High-powered enquiry into the whole security system of our defence installations, laboratories and stores. Does he think it is any case of internal sabotage or does he think there is the hand of some foreign power in these thefts which are going on in respect of sophisticated equipments of the Defence Forces?

श्री विद्याचरण शुक्ल मैं, पहले बाजनेयी जी ने एक सवाल पूछा था उनका जवाब देना चाहता हूँ। मुझे अपनी सूचना मिली है कि टेलेस्कोप को काम पर से 14 मार्च को हटाया गया था और पैक करके रखा गया था और जो मजबूत लेने आए वह प्यार

अप्रैल को। तब इस चोरी का पता लगा।
हो सकता है कि तेरह मार्च को यह बात अखबारों
में छपी हो।

महाजन जी ने जो सवाल पूछा है उसके
बारे में मैं नहीं जानता कि ये जो बम थे उन पर
डिफेंस माबिश धेया नहीं। इसके बारे
में सदन में पहले जवान दे दिया गया है और
गृह मंत्रालय के द्वारा उनकी जांच पड़ताल
की जा रही है। उसमें जिस बात का पता
लगेगा उसको हम अपने ध्यान में रखेंगे।
जहां तक शस्त्रों की सुरक्षा का मवाल
है इसके बारे में हम मोचने विचारते
रहेंगे और इसका विचार हम अवश्य
करेंगे।

मैं नहीं मानता हू कि कोई रेग्युलर
कॉम्प्रेमी चल रही है और चोरी चपाटे
से उन चीजों को ले कर देश में उकड़ठा करके
शस्त्र कानून की कोशिश की जा रही है।
मैं नहीं चाहता हू कि इस तरह की बात कह
कर आतंक पैदा किया जाए और हौवा
खड़ा किया जाए। इसे नकारना ही सकता
है। हमारे यहां सुरक्षा की जो व्यवस्था है
वह अच्छी है। उसको और ठीक किया जा
सकता है और ज्यादा सुधरा जा सकता है।
जहां बड़ी कमजोरी हम देखते हैं नियमित
रूप में उसको ठीक करते रहते हैं। इस तरह
की जब दुर्घटना होती है तो हमसे हमें जो
कमजोरी होती है उसका पता लगा है
और उसको सुधारने की हम कोशिश करते हैं।
मैं मानता हू कि सुरक्षा की गुंजाइश हर जगह
रहनी है। लेकिन मैं इस बात को नहीं मानता
हू कि सुरक्षा में कुछ इस तरह की कमजोरी है
जिस की वजह से कोई राष्ट्र व्यापी कास्पेरी
इस तरह की चल रही है कि इन चीजों की
चोरी का जाए।

SHRI MOHANRAJ KALINGARA-
YAR (Pollachi): I am really ashamed
when the emergency is still going
on, it is not lifted yet, such a matter
like this concerning the defence and
its security is discussed in this House.
Sir, it may be an article the cost of
which may not be much, but that is
not the matter at issue. It may be
just an ordinary telescope. But what
I would like to know is this. How
does this article get out of the security
line of the Defence Establishment?

Now that the Minister said that the
article appeared in the newspapers
was not correct I want to ask a question.
This is a highpowered and sophisticated
telescope valued at Rs. 1.80 lakhs whereas
the Minister put its value at Rs. 36,000 or so.

I want to know what is the range
of this telescope. He said that this is
a special type of telescope. This sort
of telescope is used for testing the
long-range 8 m.m. mortars and 120
m.m. mortars. By using the telescopes.
We will be able to find out where
the bullets are hit though, of course,
it takes time. This is a big size telescope
and, as Mr. Vajpayee said, it
cannot be just removed so easily.
How is it that they found this article
missing in the Defence Establishment
especially when it is being looked
after by the Defence Security Force.
In every establishment there is a defence
security force staying there.
They live there like any other armed
force. Without a voucher and without
obtaining the signature how can such
an article be taken out when the
unit is heavily guarded? This is
one of the best experimental establishments
for the entire India. This
telescope is located in the store room
of a Defence installation at Chandipur
which is 77 miles away from
Balasore. In the year 1896 this establishment
was established. I am ashamed
to see that this is being discussed
which involves the security of this
country I would like the Minister to
tell us if any service officers are involved
or civilians are involved. This

[Shri Mohanraj Kalingarayar]

is an Establishment where the civilians also participate inside the units. I would like to know whether they suspect any civilians who have a hand in it. Whatever little information that I have got, I think that there is some misunderstanding between the Commandant and the Civilian Defence employees. The last Commandant of the Unit, Lt Col Prakash Singh and the present Commandant have requested many a time to eliminate some of the mischief mongers from this unit due to security reasons. But, the same was overlooked.

Therefore, I want to know whether it is a fact that due to this, the Commandants are also on leave since the last few months. Also I want to know whether it is correct or not that during a public meeting sometime in January 1974, some of the employees had discussed some of the defence problems at that public meeting. I want the Minister to specifically say whether it is politically motivated by some political parties. Some of the aspects of the working of the defence side were discussed in that public meeting. Even that should be investigated and proper action should be taken. I would like the hon Minister to answer all the points that I have raised.

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA
Many questions that the hon Member asked would be answered after we have completed the enquiries as to how that had happened and whether the service officers or civilian personnel were involved in this etc. The enquiries are going on still.

As regards the range of the telescope, I have not got with me the specific information. But, I must say that the range must be adequate for our purpose. It was a good equipment. I must tell the House that this equipment was imported from U.K. in the year 1968. We have now ourselves under development a similar equipment which will perform the same function or, rather, will do the

same work in our Instrument Laboratory in Dehra Dun. And very soon, we shall be producing the same kind of telescopes in our country also. I do not know if any report was sent by the Commandant of this range to us. But I should like to assert here that if any such recommendation is sent that a particular employee is endangering the security of a particular defence establishment we take immediate steps and see to it that employee is removed from the service or from the establishment. I will not accept this information that the Commandant of this establishment sent information and we did not take any action. Nonetheless as the hon Member has mentioned about it I will look into the matter.

As regards speeches because of the Inter-Union rivalry certain speeches might have taken place but no such defence secret which calls for any action was revealed in this meetings. Although we disliked these things being discussed in the public yet we did not take any action.

श्री मधु लिनये अध्यक्ष महोदय मैं माननीय सदस्यों की इस बात से सहमत हूँ कि जहाँ तक हमारी हवाई सेना, नाविक दल और स्थल सेना के जवानों और अफसरों का सवाल है, उन के कौशल और बहादुरी के बारे में इस संदेश में दो रायें नहीं हो सकती हैं। लेकिन अनुसन्धान और उत्पादन संबंधी जो प्रतिष्ठान एस्टाब्लिशमेंट्स हैं, और सुरक्षा का जो सप्लाय विभाग है, उन में एक भरसे से ऐंभे आमार नजर आ रहे हैं कि वहाँ घाघलिया और गडबडिया बहुत हैं। मंत्री महोदय जानते हैं कि मैं उन की जानकारी में एक मामला लाया था, जिस में एक अध्यक्षी रिसर्च आफिसर को कुछ लोगों के द्वारा तब किया जा रहा था मंत्री महोदय ने कहा कि वह बहुत ही अच्छा रिसर्च आफिसर है और हम लोगों ने उस को घाने बढ़ाने की भी कोशिश की है। मैं यह उच्चारण के तौर पर बता रहा हूँ कि इस तरह की बातें अनुसन्धान प्रतिष्ठानों में भी

धीरे-धीरे आने लगी हैं। इन में सुरक्षा का बहुत बड़ा सवाल है। कुछ दिन पहले इसी सदन में कानपुर में मिले बमों का मामला उठाया गया था। उस के बाद पता चला कि उत्तर प्रदेश में और एक जगह इसी तरह के बम पाये गये, जो आर्डिनेंस डिपो से गायब हुए थे।

दो तीन दिन पहले, जब मैं दौरे पर था, मैं ने यह खबर पढ़ी थी कि बम्बई में चेम्बूर के पास माहली नाम के गांव में एक बच्चे को दो सबमेरिन विध्वंसक बम मिले बाद में पुलिस ने उन को बच्चे में ले लिया और अब नाविक दल के लोग उस के लोग उसने वारे में जांच कर रहे हैं। क्या मंत्री महोदय इन प्रतिष्ठानों के सिक्युरिटी संबंधी नियमों और रेगुलेशन्स के बारे में एक नये ढंग से और आधुनिक दृष्टिकोण से सोचेंगे ताकि इन तरह की गड़बाड़ियों को रोका जा सके?

दुसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि बालेश्वर में यह जो प्रतिष्ठान था पूफ एंड एक्स्प रिमेंटल गेटविलशमेंट क्या उसके आस पास ऐम निजी कारखाने या किसी एस्टैब्लिशमेंट्स वगैरह हैं क्यों इसके बारे में आप लोगों का नियम भी है कि आस पास इस तरह का कुछ नहीं रहना चाहिए लेकिन बड़े लोगों के रिश्तेदारों के लिए आप इन नियमों को तोड़ते भी हैं जैसे गुडगांव के कारखाने मारुति लिमिटेड के बारे में आप ने किया (व्यवधान) . . . घबड़ाने की जरूरत नहीं है, मैं इस समय मारुति के बारे में कुछ नहीं कहने जा रहा हूं। . . . (व्यवधान) . . . कुछ लोगों को मा शब्द से ही नफरत है चाहे मारुति ही चाहे कुछ हो। (व्यवधान)

श्री वसंत साठे (अकोला) : हमें तो नफरत नहीं है लेकिन आप क्यों रोते हैं ?

श्री मधु लिमये : मैं यह कह रहा था कि क्या इस तरह के कोई निजी प्रतिष्ठान

आसपास हैं और क्या मंत्री महोदय इस पहलू पर भी विचार करेंगे कि क्या यह दूरबीन विदेशों में तो नहीं चली गई है ? क्योंकि देश में क्या निजी लोग इसका इस्तेमाल करेंगे ? यह समझ में नहीं आ रहा है। अब मजाक में तो बात कही गई कि शायद यूथ कांग्रेस निगरानी रख रहा है आर० एस० एम० पर या आर० एस० एस० यूथ कांग्रेस पर निगरानी रख रहा है। लेकिन मेरा कहना यह है कि मंत्री महोदय इस पहलू को भी विचार कर लें कि क्या यह विदेशों में चली गई है ? अगर चली गई है तो फिर इनका कस्टम उस पर क्या कर रहा है ? इसमें बहुत सारे मामले निकलते हैं , इसलिए इसकी पूरी जांच होनी चाहिए।

अन्तिम बात मैं यह कहना चाहता हूं कि जब इस तरह के मामले सदन के सामने आते हैं तो मंत्री महोदय आश्वासन देते हैं कि जांच वगैरह की जा रही है, लेकिन बाद में क्या किया जाता है उसके बारे में मंत्रियों के द्वारा सदन के सामने कोई रपट नहीं रखी जाती। सदस्य भी भूल जाते हैं और मंत्री भी भूल जाते हैं। इसलिए क्या आप इस तरह का आश्वासन देंगे कि कानपुर वाला मामला या यह चेम्बूर वाला मामला जो सबमेरिन विध्वंसक बम के बारे में है, इस तरह के जितने मामले हैं, उनकी जांच पूरी होने के बाद उसके निष्कर्ष सभा के सामने रखे जाएंगे?

श्री विद्याचरण शुक्ल: यह जो दूरबीन थी उसे उपयोग में लाया जाता था तोपें जो चलायी जाती थी उनकी टेस्टिंग के लिए या उनकी एलाइनमेंट ठीक है या नहीं है यह देखने के लिए और जो माननीय सदस्य ने बात कही बम की जो उत्तर प्रदेश में पाया गया और चेम्बूर में पाया गया उसके बारे में जैसा मैंने पहले कहा गृह मंत्रालय के द्वारा जांच हो रही है। उनकी जांच पूरी हो जाने के बाद यदि सुरक्षा मंत्रालय का कुछ संबंध आता है या हमारे किसी प्रतिष्ठान का संबंध आता है या हमारे किसी ऐसे मेटैरियल का

[श्री विद्याचरण शुक्ल]

संबंध आता है तो हम उसमें जो कार्यवाही ठीक होगी वह अवश्य करेंगे ।

जहां तक उसके बारे में सदन को अवगत कराने की बात है मैंने इस बात का आश्वासन दिया है पहले सतपाल कपूर न जब प्रश्न पूछा था कि इसके जो भी निष्कर्ष निकलें और उस पर जो भी कुछ कार्यवाही करें उससे हम सदन को अवगत कराएं तो यह आश्वासन हमने दिया है कि हम उससे अवगत कराएंगे और जो हमारी आश्वासन समिति है वह इस आश्वासन का ध्यान रखेगी कि इसमें कोई गड़बड़ न हो और इसे पूरा किया जाये ।

जहां तक बालासोर प्रतिष्ठान के आस-पास दूसरे निजी प्रतिष्ठान होने का सवाल है जहां तक मेरी निजी सूचना है वहां पर ऐसी कोई चीज नहीं है । यदि कोई ऐसी चीज होगी तो हम उसका ध्यान रखेंगे लेकिन जहां तक मैं जानता हूं वहां कोई ऐसा प्रतिष्ठान नहीं है जो इतने आसपास हो कि जिस पर शक करें ।

श्री सतपाल कपूर : इसकी स्कैन वैल्यू कितनी है ? कहीं स्कैन के रूप में किसी ने उसे न बेच दिया हो ।

श्री विद्याचरण शुक्ल : यह भी हो सकता है । लेकिन इसके लिए तो कुछ कहना मुश्किल है क्योंकि हम स्कैन बेचते नहीं है । इसका वजन करीब 25 किलोग्राम था इस टेलीस्कोप का और इसका डाइमेंशन करीब 20 इंच से लेकर दस इंच और दस इंच चौड़ाई इस प्रकार में था । यह पाम देखने की चीज थी क्योंकि गुन का एलाइनमेंट उससे देखते थे कि जो फायरिंग होगी वह ठीक होगी या नहीं, वह देखने की चीज थी । जैसा मैंने पहले कहा, इस तरह के टेलीस्कोप को भारतवर्ष में बनाना हम प्रारम्भ करने वाले हैं और यह ऐसी कोई चीज नहीं है कि जिसके एक बार गुम हो जाने के बाद इसको फिर से पाया न जा सके ।

12.51 hrs.

RE. MOTION OF ADJOURNMENT
(Query)

SHRI S. M. BANERJEE (Kanpur): I have given notice of an adjournment motion.

MR. SPEAKER: How is it? Some strike is coming after many days and you give notice of an adjournment motion?

SHRI JYOTIRMOY BOSU (Diamond Harbour): Your hon. members won't be able to go back home because of the impending strike.... (Interruptions).

MR. SPEAKER: I am sorry.

PROF. MADHU DANAVATE (Rajapur): On this issue, during your absence, the Deputy-Speaker had given a ruling. I would like to draw your attention to that. He said the Minister was meeting the labour leaders on the 18th. After that, Shri Jyotirmoy Bosu said that we want an assurance from the horse's mouth. The Deputy-Speaker observed that the 'horse himself would come to the House and from the horse's mouth you will hear'. After the 18th, we were expecting to hear this from the horse's mouth (Interruptions).

MR. SPEAKER: Please sit down. Some notice is given of a strike. I do not know.

PROF. MADHU DANAVATE: You kindly go through the records.

MR. SPEAKER: You must, after all, be reasonable. The rules provide certain conditions. It must relate to a matter of urgent public importance of recent occurrence. There is no occurrence. Some notice is given of an impending strike, whether the strike will occur or not, whether negotiations will succeed or not, you are worried about an adjournment motion even before that!

SHRI S. M. BANERJEE: On a point of order.

MR. SPEAKER: No point of order.